ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class -VI

Subject- Hindi Second Language

Topic- बचपन (संस्मरण)

By-Anu Bala

Bachpan

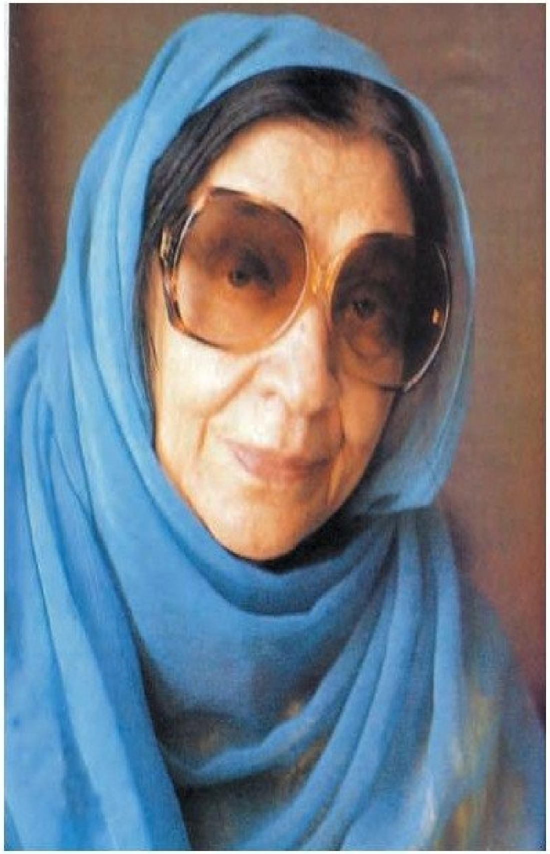

पाठ परिचय - बचपन नामक संस्मरण कृष्णा सोबती द्वारा रचित है। इस पाठ में लेखिका ने अपने बचपन की घटनाओं, क्रिया - कलापों व यादों के बारे में बताया है।

बचपन

मैं तुम्हें अपने बचपन की ओर ले जाऊँगी।

मैं तुमसे कुछ इतनी बड़ी हूँ कि तुम्हारी दादी भी हो सकती हूँ, तुम्हारी नानी भी। बड़ी बुआ भी—बड़ी मौसी भी। परिवार में मुझे सभी लोग जीजी कहकर ही पुकारते हैं।

हाँ, मैं इन दिनों कुछ बड़ा-बड़ा यानी उम्र में सयाना महसूस करने लगी हूँ। शायद इसलिए कि पिछली शताब्दी में पैदा हुई थी। मेरे पहनने-ओढ़ने में भी काफ़ी बदलाव आए हैं। पहले मैं रंग-बिरंगे कपड़े पहनती रही हूँ। नीला-जामुनी-ग्रे-काला-चॉकलेटी। अब मन कुछ ऐसा करता है कि सफ़ेद पहनो। गहरे नहीं, हलके रंग। मैंने पिछले दशकों में तरह-तरह की पोशाकें पहनी हैं। पहले फ्रॉक, फिर निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे और अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते।

सयाना-बड़ा mature , महसूस करना – समझना अनुभव करना understood , to feel , शताब्दी – सदी ,सौ वर्ष की अवधि century ,दशक – दस वर्ष की अवधि – a decade पोशाक – कपड़े cloths
पहनना-to put on , to wear गरारे -a loose trousers चूड़ीदार – dress with pleats

बचपन

बचपन के कुछ फ्रॉक तो मुझे अब तक याद हैं।

हलकी नीली और पीली धारीवाला फ्रॉक। गोल कॉलर और बाज़ू पर भी गोल कफ़।

एक हलके गुलाबी रंग का बारीक चुन्नटोंवाला घेरदार फ्रॉक। नीचे गुलाबी रंग की फ्रिल।

उन दिनों फ्रॉक के ऊपर की जेब में रूमाल और बालों में इतराते रंग–बिरंगे रिबन का चलन था।

लेमन कलर का बड़े प्लेटोंवाला गर्म फ्रॉक जिसके नीचे फ़र टँकी थी।

दो ट्यूनिक भी याद हैं। एक चॉकलेट रंग का और अंदर की कोटी प्याज़ी। दूसरा ग्रे और उसके साथ सफ़ेद कोटी।

बचपन – childhood फ्रिल – झालर frill

धारीवाला - lined , striped बारीक –thin

चुन्नटोंवाला – a frilled घेरदार – encircling - ample of a garment

इतराते - इठलाते , झूमते to behave with pride , swagger चलन – परम्परा procedure custom .

बचपन

मुझे अपने मोज़े और स्टॉकिंग भी याद हैं!

बचपन में हमें अपने मोज़े खुद धोने पड़ते थे। वह नौकर या नौकरानी को नहीं दिए जा सकते थे। इसकी सख्त मनाही थी।

हम बच्चे इतवार की सुबह इसी में लगाते। धो लेने के बाद अपने–अपने जूते पॉलिश करके चमकाते। जब जूते कपड़े या ब्रश से रगड़ते तो पॉलिश की चमक उभरने लगती।

सरवर, मुझे आज भी बूट पॉलिश करना अच्छा लगता है। हालाँकि अब नयी–नयी किस्म के शू आ चुके हैं। कहना होगा कि ये पहले से कहीं ज़्यादा आरामदेह हैं। हमें जब नए जूते मिलते, उसके साथ ही छालों का इलाज शुरू हो जाता।

जब कभी लंबी सैर पर निकलते, अपने पास रुई ज़रूर रखते। जूता लगा तो रुई मोज़े के अंदर। हाँ, हमारे–तुम्हारे बचपन में तो

सख्त-कड़ा या कठोर-strong , solid
मनाही- सख्ती से मना करना prohibi tion
हालाँकि –यद्यपि however
किस्म-प्रकार -type आराम देह – आराम देनेवाले comfortable
छाला - ulcer pustule , blister
इलाज- उपचार remedy treatment

बचपन

के अंदर। हाँ, हमारे–तुम्हारे बचपन में तो बहुत फ़र्क हो चुका है।

हर शनीचर को हमें ऑलिव ऑयल या कैस्टर ऑयल पीना पड़ता। यह एक मुश्किल काम था। शनीचर को सुबह से ही नाक में इसकी गंध आने लगती!

छोटे शीशे के गिलास, जिन पर ठीक खुराक के लिए निशान पड़े रहते, उन्हें देखते ही मितली होने लगती।

मुझे आज भी लगता है कि अगर हम न भी पीते वह शनिवारी दवा तो कुछ ज़्यादा बिगड़ने वाला नहीं था। सेहत ठीक ही रहती।

ऑलिव ऑयल – olive oil जैतू
तेल , कैस्टर ऑयल –अरंडी का तेल Caster oil खुराक- खाने की मात्रा Single dose of medicine मितली- मन खराब होना to feel nausea

बिगड़ने वाला- खराब होने वाला to Be spoiled
सेहत - स्वास्थ्य health

बचपन

तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है। यहाँ तक कि बचपन की दिलचस्पियाँ भी बदल गई हैं।

दिलचस्पियाँ – रुचियाँ Interests बदल जाना – बदलना , तबदील हो जाना - to change

बचपन

याद रहे, उन दिनों कुछ घरों में ग्रामोफ़ोन थे, रेडियो और टेलीविजन नहीं थे।

हमारे बचपन की कुलफ़ी आइसक्रीम हो गई है। कचौड़ी-समोसा, पैटीज़ में बदल गया है। शहतूत और फ़ाल्से और खसखस के शरबत कोक-पेप्सी में।

उन दिनों कोक नहीं, लेमनेड, विमटो मिलती थी।

शिमला और नयी दिल्ली में बड़े हुए बच्चों को वेंगर्स और डेविको रेस्तराँ की चॉकलेट और पेस्ट्री मज़ा देनेवाली होती। हम भाई-बहनों की ड्यूटी लगती शिमला माल से ब्राउन ब्रेड लाने की।

हमारा घर माल से ज़्यादा दूर नहीं था। एक छोटी-सी चढ़ाई और गिरजा मैदान पहुँच जाते। वहाँ से एक उतराई उतरते और माल पर। कन्फ़ेक्शनरी काउंटर पर तरह-तरह की पेस्ट्री और चॉकलेट की खुशबू मनभावनी!

हमें हफ़्ते में एक बार चॉकलेट खरीदने की छूट थी। सबसे ज़्यादा मेरे पास ही चॉकलेट-टॉफ़ी का स्टॉक रहता। मैं चॉकलेट लेकर खड़े-खड़े कभी न खाती। घर लौटकर साइडबोर्ड पर रख देती और रात के खाने के बाद बिस्तर में लेटकर मज़ा ले-ले खाती।

शहतूत – तूत का फ़ल malberry

फालसा- a fruit its berry

उतराई – नीचे आना slop

उतरते – to come down the slop

मन भावनी - मन को भाने वाली – to be pleasure to the mind

बचपन

शिमला के काफ़ल भी बहुत याद आते हैं। खट्टे-मीठे। कुछ एकदम लाल, कुछ गुलाबी। रसभरी। कसमल। सोचकर ही मुँह में पानी भर आए। चेस्टनट एक और गज़ब की चीज़। आग पर भूने जाते और फिर छिलके उतारकर मुँह में।

चने ज़ोर गरम और अनारदाने का चूर्ण! हाँ, चने ज़ोर गरम की पुड़िया जो तब थी, वह अब भी नज़र आती है। पुराने कागज़ों से बनाई हुई इस पुड़िया में निरा हाथ का कमाल है। नीचे से तिरछी लपेटते हुए ऊपर से इतनी चौड़ी कि चने आसानी से हथेली पर पहुँच जाएँ। एक वक्त था जब फ़िल्म का गाना–चना ज़ोर गरम बाबू मैं लाया मज़ेदार, चना ज़ोर गरम–उन दिनों स्कूल के हर बच्चे को आता था।

कुछ बच्चे पुड़िया पर तेज़ मसाला बुरकवाते। पूरा गिरजा मैदान घूमने तक यह पुड़िया चलती। एक-एक चना-पापड़ी मुँह में डालने और कदम उठाने में एक खास ही लय-रफ़्तार थी।

छुटपन में हमने शिमला रिज पर बहुत मज़े किए हैं। घोड़ों की सवारी की है। शिमला के हर बच्चे को कभी-न-कभी यह मौका मिल ही जाता था।

raspberry currant मकोय
,कसमल- a fruit , गज़ब -
असाधारन,अद्भुत- fantasting ,amazing
अनार दाने का चूर्ण –powdered pomegranate seeds
पुड़िया – a packet
निरा - बिलकुल केवल only
कमाल – सर्वोतम अति अद्भुत wonderful terrific
तिरछी – virgule ,slanting , oblique
लपेटना - घेरा देकर बाँधना enclose to wraps ,wathed
छुटपन - बचपन -Childhood

बचपन

हम जाने क्यों घोड़ों को कुछ कमतर करके समझते। उन पर हँसते थे। ननिहाल के घोड़े खूब हृष्ट-पुष्ट और खूबसूरत। उनकी बात फिर कभी।

शाम को रंग-बिरंगे गुब्बारे। सामने जाखू का पहाड़। ऊँचा चर्च। चर्च की घंटियाँ बजतीं तो दूर-दूर तक उनकी गूँज फैल जाती। लगता, इसके संगीत से प्रभु ईशू स्वयं कुछ कह रहे हैं।

सामने आकाश पर सूर्यास्त हो रहा है। गुलाबी सुनहरी धारियाँ नीले आसमान पर फैल रही हैं। दूर-दूर फैले पहाड़ों के मुखड़े गहराने लगे और देखते-देखते बत्तियाँ टिमटिमाने लगीं। रिज पर की रौनक और माल की दुकानों की चमक के भी क्या कहने! स्कैंडल पॉइंट की भीड़ से उभरता कोलाहल।

सरवर, स्कैंडल पॉइंट के ठीक सामने उन दिनों एक दुकान हुआ करती थी, जिसके शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल बना हुआ था। इसकी पटरियाँ–उस पर खड़ी छोटे-छोटे डिब्बों वाली ट्रेन। एक ओर लाल टीन की छतवाला स्टेशन और सामने सिग्नल देता खंबा–थोड़ी-थोड़ी दूर पर बनीं सुरंगें।

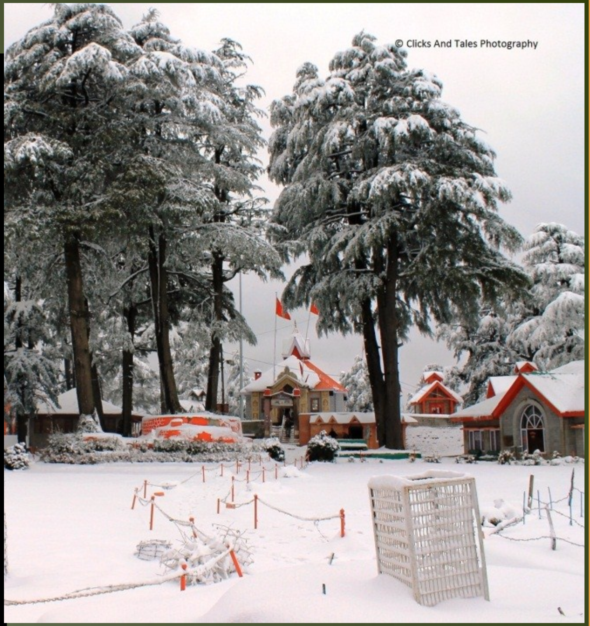

कम तर - ज्यादा छोटा very small
ननिहाल - maternal parents House
हृष्ट - पुष्ट - healthy
गूँज - eco
सूर्यास्त - सूर्य का अस्त होना - Sunset रौनक-happy atmosphere
उभरता कोलाहल rising noise due to movement of people पटरियाँ-rail lines

बचपन

पिछली सदी में तेज़ रफ़्तारवाली गाड़ी वही थी। कभी-कभी हवाई जहाज़ भी देखने को मिलते! दिल्ली में जब भी उनकी आवाज़ आती, बच्चे उन्हें देखने बाहर दौड़ते। दीखता एक भारी-भरकम पक्षी उड़ा जा रहा है पंख फैलाकर। यह देखो और वह गायब! उसकी स्पीड ही इतनी तेज़ लगती। हाँ, गाड़ी के मॉडलवाली दुकान के साथ एक और ऐसी दुकान थी जो मुझे कभी नहीं भूलती। यह वह दुकान थी जहाँ मेरा पहला चश्मा बना था। वहाँ आँखों के डॉक्टर अंग्रेज़ थे।

शुरू-शुरू में चश्मा लगाना बड़ा अटपटा लगा। छोटे-बड़े मेरे चेहरे की ओर देखते और कहते–आँखों में कुछ तकलीफ़ है! इस उम्र में ऐनक! दूध पिया करो। मैं डॉक्टर साहिब का कहा दोहरा देती–कुछ देर पहनोगी तो ऐनक उतर जाएगी।

वैसे डॉक्टर साहिब ने पूरा आश्वासन दिया था, लेकिन चश्मा तो अब तक नहीं उतरा। नंबर बस कम ही होता रहा! मैं अपने-आप इसकी ज़िम्मेवार हूँ। जब आप दिन की रोशनी को छोड़कर रात में टेबल लैंप के सामने काम करेंगी–तो इसके अलावा और क्या होगा! हाँ, जब पहली बार मैंने चश्मा लगाया तो मेरे एक चचेरे भाई ने मुझे छेड़ा–देखो, देखो, कैसी लग रही है!

सदी- **शताब्दी,सौ वर्ष की अवधि - century ,**
रफ़्तार – गति- speed
अटपटा – अज़ीब-सा-weird
आश्वासन – भरोसा - promise
,जिम्मेवार –उत्तरदाई- responsible

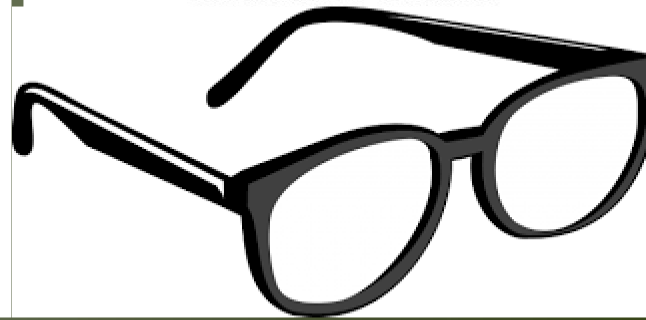

बचपन

आँख पर चश्मा लगाया

ताकि सूझे दूर की

यह नहीं लड़की को मालूम

सूरत बनी लंगूर की!

मैं खीझी कि मुझ पर यह क्यों दोहराया जा रहा है! पर शेर बुरा न लगा।

जब वह चाय पीकर चले गए तो मैं अपने कमरे में जाकर आईने के सामने खड़ी हो गई। कई बार अपने को देखा। ऐनक उतारी। फिर पहनी। फिर उतारी। देखती रही–देखती रही।

सूरत बनी लंगूर की–

नहीं–नहीं–नहीं–

हाँ–हाँ–हाँ–

सूरत – शक्ल - face
लंगूर – हाथ पैरऔर काले मुहँवाला तथा लंबी पूँछ वाला बंदर –बबून
चश्मा - ऐनक glasses
सुझे – दिखाई देना look
खीझना – क्रोध करना getting angry
दोहराना – फिर से कहना repitition

बचपन

मैंने अपने छोटे भाई का टोपा उठाकर सिर पर रखा। कुछ अजीब लगा। अच्छा भी और मज़ाकिया भी।

तब की बात थी, अब तो चेहरे के साथ घुल-मिल गया है चश्मा। जब कभी उतरा हुआ होता है तो चेहरा खाली-खाली लगने लगता है।

याद आ गया वह टोपा, काली फ्रेम का चश्मा और लंगूर की सूरत! हाँ, इन दिनों शिमला में मैं सिर पर टोपी लगाना पसंद करती हूँ। मैंने कई रंगों की जमा कर ली हैं। कहाँ दुपट्टों का ओढ़ना और कहाँ सहज सहल सुभीते वाली हिमाचली टोपियाँ!

❑ कृष्णा सोबती

अजीब - अनोखा awesome
घुल मिल जाना- एक हो जाना
दुपट्टा – a long scarf
सहज - स्वभाविक easy
दुपट्टों का ओढ़ना – wearing a long scarf , tippet
सहल –आसान easy
सुभीते वाली – आरामदायक , उपुक्त – comfortable ,suitable

अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

प्रश्न-1-लेखिका का मन अब सफेद पहनने को करता है, क्यों ?
उत्तर - लेखिका का मन उम्र अधिक होने के कारण अब सफेद पहनने को करता है।
प्रश्न - 2 - बचपन पाठ में शताब्दी का क्या अर्थ है?
उत्तर- शताब्दी का क्या अर्थ है एक सौ साल का समय ।
प्रश्न - 3 - लेखिका चॉकलेट खरीदने कहाँ जाती थी?
उत्तर - लेखिका चॉकलेट खरीदने शिमला माल जाती थी।
प्रश्न - 4- तेज़ रफ़्तार वाली गाड़ी कौन - सी थी?
उत्तर - तेज़ रफ़्तार वाली गाड़ी शिमला - कालका ट्रेन थी।
प्रश्न- 5- बचपन में चश्मा लगाने पर लेखिका को चिढ़ाते हुए भाई ने क्या कहा था?
उत्तर - बचपन में चश्मा लगाने पर लेखिका को चिढ़ाते हुए भाई ने लंगूर कहा था ।

प्रश्न- 6-लेखिका को आज भी क्या पसंद है ?
उत्तर-लेखिका को आज भी बूट पॉलिश करना पसंद है ।
प्रश्न- 7- समय में दूरी होने का क्या अर्थ है ?
उत्तर- समय में दूरी होने का अर्थ है-अधिक समय बीतने से बदलाव आ जाना।
प्रश्न- 8- जूतों से पड़ने वाले छालों से बचने के लिए लेखिका क्या करती थी ?
उत्तर-जूतों से पड़ने वाले छालों से बचने के लिए लेखिका जूतों में रुई रखती थी।
प्रश्न- 9- लेखिका को एक हफ्ते में कितनी बार चॉकलेट खरीदने की छूट थी ?
उत्तर-लेखिका को एक हफ्ते में एक ही बार चॉकलेट खरीदने की छूट थी ।
प्रश्न- 10- लेखिका को अपने बचपन की कौन-सी चीज आज भी नज़र आती है?
उत्तर- लेखिका को अपने बचपन की चना ज़ोर गरम की पुड़िया आज भी नज़र आती है

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. लेखिका का जन्म कब हुआ था ?उनकी उम्र कितनी थी ?
उत्तर:- लेखिका का जन्म पिछली शताब्दी में हुआ था | उनकी उम्र दादी और नानी जितनी थी |
2. बचपन में लेखिका को मोज़े क्यों धोने पड़ते थे ?
उत्तर:- बचपन में नौकर या नौकरानी से मोज़े धुलवाने की मनाही थी , इसलिए उन्हें खुद ही मोज़े धोने पड़ते थे |
3. लेखिका बचपन में इतवार की सुबह क्या-क्या काम करती थीं?
उत्तर:- लेखिका बचपन में इतवार (रविवार) की सुबह अपने मोज़े धोती थी। उसके बाद अपने जूते पॉलिश करके कपड़े से चमकाती थी। इतवार की सुबह इसी काम में लगाती थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

4. लेखिका अपने बचपन में कौन–कौन सी चीज़े मज़ा लेकर खाती थी ?और उन्हें कौन से फल पसंद थे ?

उत्तर:- लेखिका अपने बचपन में रात को सोते समय चाकलेट मज़ा ले-लेकर खाती थीं | इसके इलावा उन्हें चेस्टनट , चना ज़ोर गरम और अनारदाने का चूर्ण भी पसंद था | फलों में शिमला के रसभरी, कसमल और काफ़ल उनके प्रिय थे।

5. उम्र बढ़ने के साथ-साथ लेखिका में क्या-क्या बदलाव हुए हैं?

उत्तर:- उम्र बढ़ने के साथ-साथ लेखिका के पहनावे में भीं काफी बदलाव आए जैसे वे पहले गहरे रंग की फ्रॉक, निकर-वॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे आदि पसंद करती थीं जबकि अब हल्के रंग और चूड़ीदार तथा घेरदार कुर्ते पहनना पसंद करतीं हैं ।

6. 'तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है।' – यह कहकर लेखिका क्या-क्या बताती हैं?

उत्तर:- 'तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है।' – यह कहकर लेखिका बताती है कि उन दिनों मनोरंजन के लिए कुछ घरों में ग्रामोफ़ोन थे परंतु उसके स्थान पर आज हर घर में रेडियो और टेलीविजन देखने को मिलता है। कुलफ़ी की जगह आइसक्रीम ने ले ली है। कचौड़ी-समोसा पैटीज में बदल गया है। शहतूत और फ़ाल्से और खसखस के शरबत का स्थान कोक-पेप्सी ने ले लिया है।